प्रा०।

चाचा चौधरी और हीरो का हार

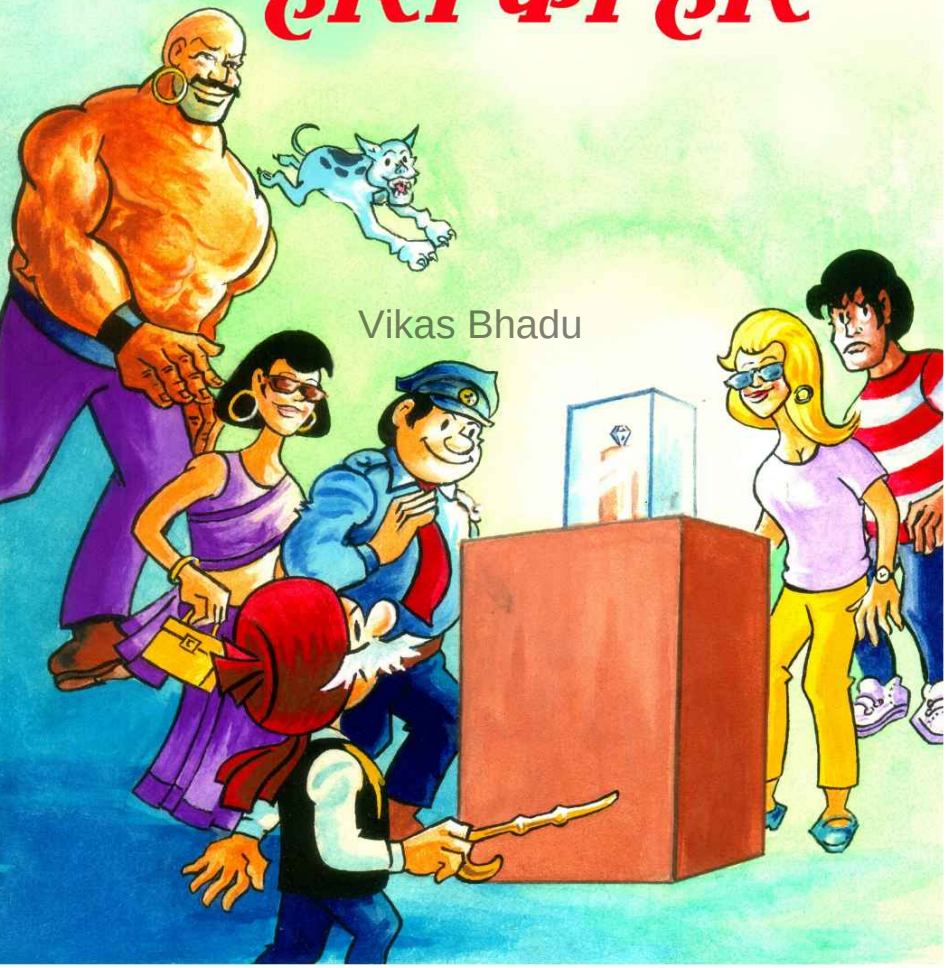

Vikas Bhadu

हीरे का हार
दीवान युद्धवीर सिंह ने एक दिन अपनी पत्नी से कहा...
आज अपने सुन्ने का जन्मदिन है. इसलिए मैं उसे यह हीरे का हार देता हूं.
यह हीरे का हार तो बहुत कीमती है. इसकी कीमत तो एक लाख से भी ऊपर होगी.
लेकिन तुम्हारे सुन्ने से ज्यादा कीमती नहीं.
Vikas Bhadu
पिताजी, मैं बाहर खेलने जाऊं ?
जाओ बेटा.
दोस्तो, आओ खेलें.
C-262
© PRAN'S FEATURES

वाह! ... जाओ मुन्ना, पकड़ कर लाओ.
हा-हा-! यह हीरे का हार तो बहुत कीमती नजर आता है
Vikas Bhadu
अगर तुम जिंदा रहे तो पुलिस को खबर कर दोगे. इसलिये तुम्हारा मरना ही ठीक है.
नहीं, मुझे मत मारो!
पास ही से चाचा चौधरी का गुजरना हुआ. मुन्ने की आवाज उस के कानों में पड़ी.
मुझे मत मारो!

चौधरी आओ! मेरे पिस्तौल में छह गोलियां हैं, जो तुम दोनों के लिये काफी हैं.
चौधरी, तुम खतरनाक आदमी हो. इसलिये पहले तुम्हें ही शूट करता हूं.
देखो, तुम्हारे पीछे कौन है?
ओह!
यह ट्रिक पुरानी जरूर है लेकिन हमेशा कामयाब होती है
रहम! मुझ पर रहम करो
मुन्ने के मां बाप के पास चलो. वही तुम पर रहम कर सकते हैं.
दीवान साहब, बच्चे को इतना कीमती हार पहनाना, बच्चे को जोखम में ढकेलने के बराबर होता है.
मैं शर्मिंदा हूं चाचा जी.
Vikas Bhadu

चाचाजी, आपका तसकोल का ड्रम आ गया है.
ठीक है, इसे अंदर रख दो.

चाचाजी, मैं ने ड्रम कमरे में रख दिया है.
आकर अपनी मजदूरी ले जाओ.

Vikas Bha

अजी, मैं ने कहा, घर में मक्खन बहुत इकट्ठा हो गया है.
कितना?

एक ड्रम भर गया है.

आज तो मक्खन के ड्रम को यहीं रहने दे. कल सवेरे मैं किसी डेयरी वाले को बेच दूंगा.

भाई मोटन, चाचा चौधरी के घर में मक्खन बहुत इकट्ठा हो गया है.
हां, भाई मोटन, चाची को कहते तो सुना मैं ने भी है.
अगर हम यह मक्खन से भरा ड्रम चुरा लें तो पेट भर कर खुद खाएं और जो बचे उसे सैंकड़ों रुपए में किसी डेयरी वाले को बेच दें.
वाह क्या तरकीब निकाली है.
रात को.
चाचा चौधरी रात को अपने घर के दरवाजे भी खुले छोड़ देता है.
उसे गलतफहमी है कि कोई चोर उच्चका उसके घर नहीं घुस सकता.
अजी, मुझे साथ वाले कमरे में किसी के पांवों की आवाज सुनाई दे रही है.
भागवान, हमारे घर से कोई कुछ नहीं ले जा सकता. चुपचाप सो जा.
अरे, यहां तो दो दो ड्रम पड़े हैं. अंधेरे में पता नहीं मक्खन किस में है?
यह ड्रम काफी भारी है. मक्खन वाला यही है.
चलो इसे ही ले चलो.

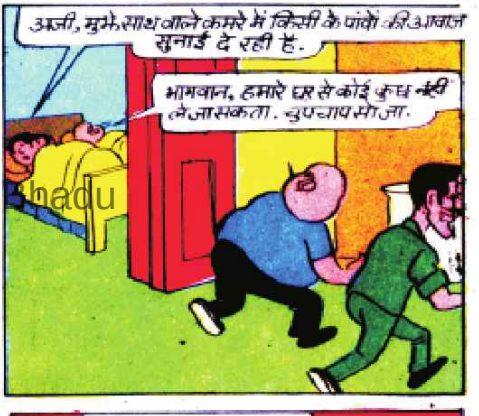

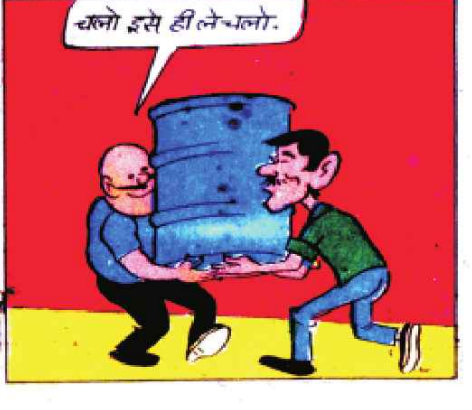

Vikas Bhadu

तभी एक भागते हुए चूहे की पूंछ पर मोटन का पैर पड़ जाता है.

आह!

धड़ाम!

यह आवाज कैसी? मैंने कहती थी कि साथ वाले कमरे में कोई है. बिजली जलाओ.

घर की सारी बिजलियां जल जाती हैं.

Vikas Bhadauria

हा---हा--! ये तो मोटन और मोटन हैं. लगता है ये मक्खन चुराने आए थे और तारकोल से मुंह काला कर बैठे.

सवेरा होने पर उन्हें पुलिस के हवाले करूंगा.

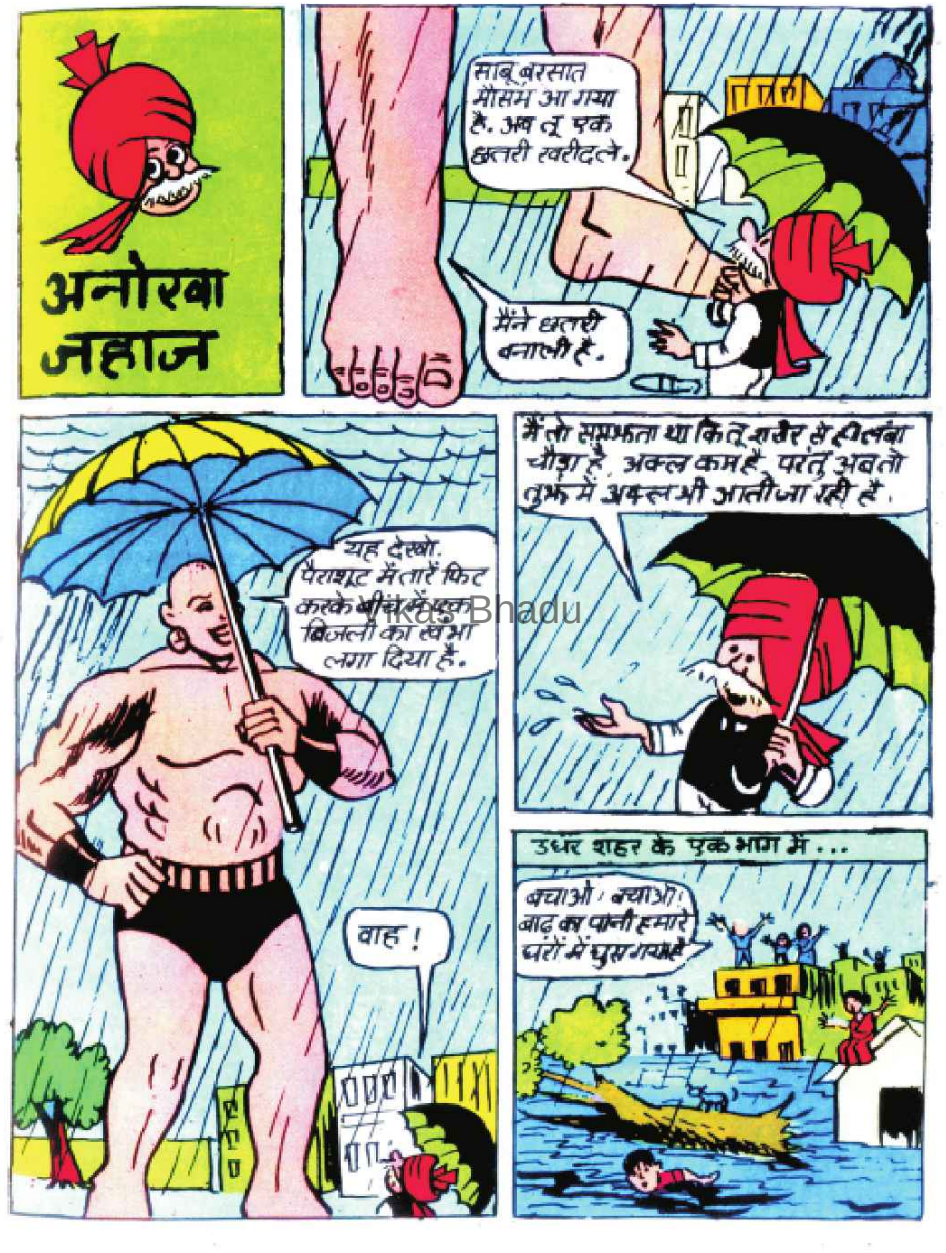

अनोखा जहाज
साबू बरसात मौसम आ गया है. अब तू एक छतरी खरीदले.
मैंने छतरी बनाली है.
यह देखो. पैराशूट में तारें फिट करके बीच में एक बिजली का खंभा लगा दिया है.
वाह !
मैं तो समझता था कि तू शरीर से ही लंबा चौड़ा है, अक्ल कम है. परंतु अब तो तुझ में अक्ल भी आती जा रही है.
उधर शहर के एक भाग में . . .
बचाओ! बचाओ! बाढ़ का पानी हमारे घरों में घुस गया है

Vikas Bhadu

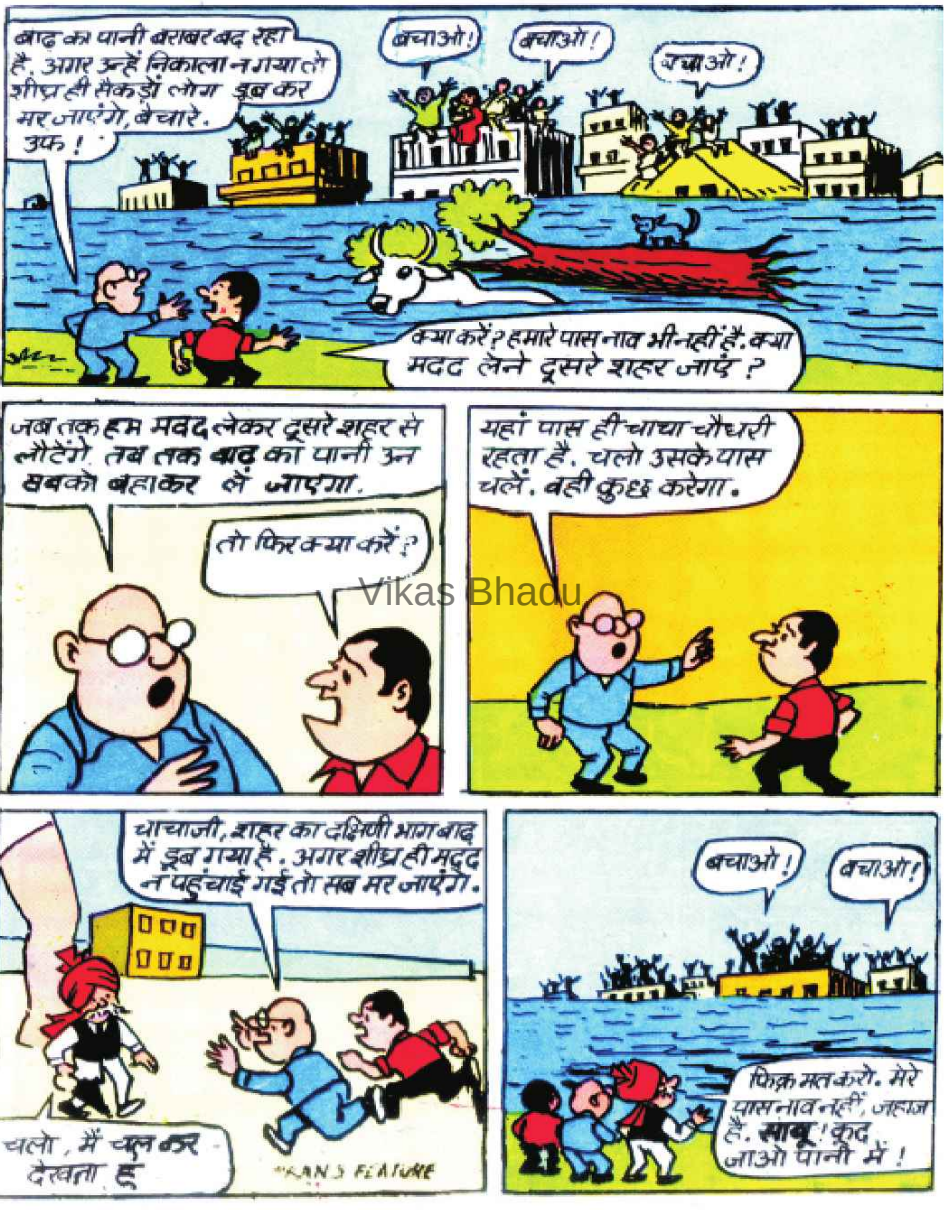

बाढ़ का पानी बराबर बढ़ रहा है. अगर इन्हें निकाला न गया तो शीघ्र ही सैकड़ों लोग डूब कर मर जाएंगे, बेचारे. उफ !
बचाओ!
बचाओ!
बचाओ!
क्या करें? हमारे पास नाव भी नहीं है. क्या मदद लेने दूसरे शहर जाएं?
जब तक हम मदद लेकर दूसरे शहर से लौटेंगे, तब तक बाढ़ का पानी उन सबको बहाकर ले जाएगा.
तो फिर क्या करें?
यहां पास ही चाचा चौधरी रहता है. चलो उसके पास चलें. वही कुछ करेगा.
चाचाजी, शहर का दक्षिणी भाग बाढ़ में डूब गया है. अगर शीघ्र ही मदद न पहुंचाई गई तो सब मर जाएंगे.
चलो, मैं चल कर देखता हूं
PRAN'S FEATURE
बचाओ!
बचाओ!
फिक्र मत करो. मेरे पास नाव नहीं, जहाज है. साबू! कूद जाओ पानी में!

Vikas Bhadu

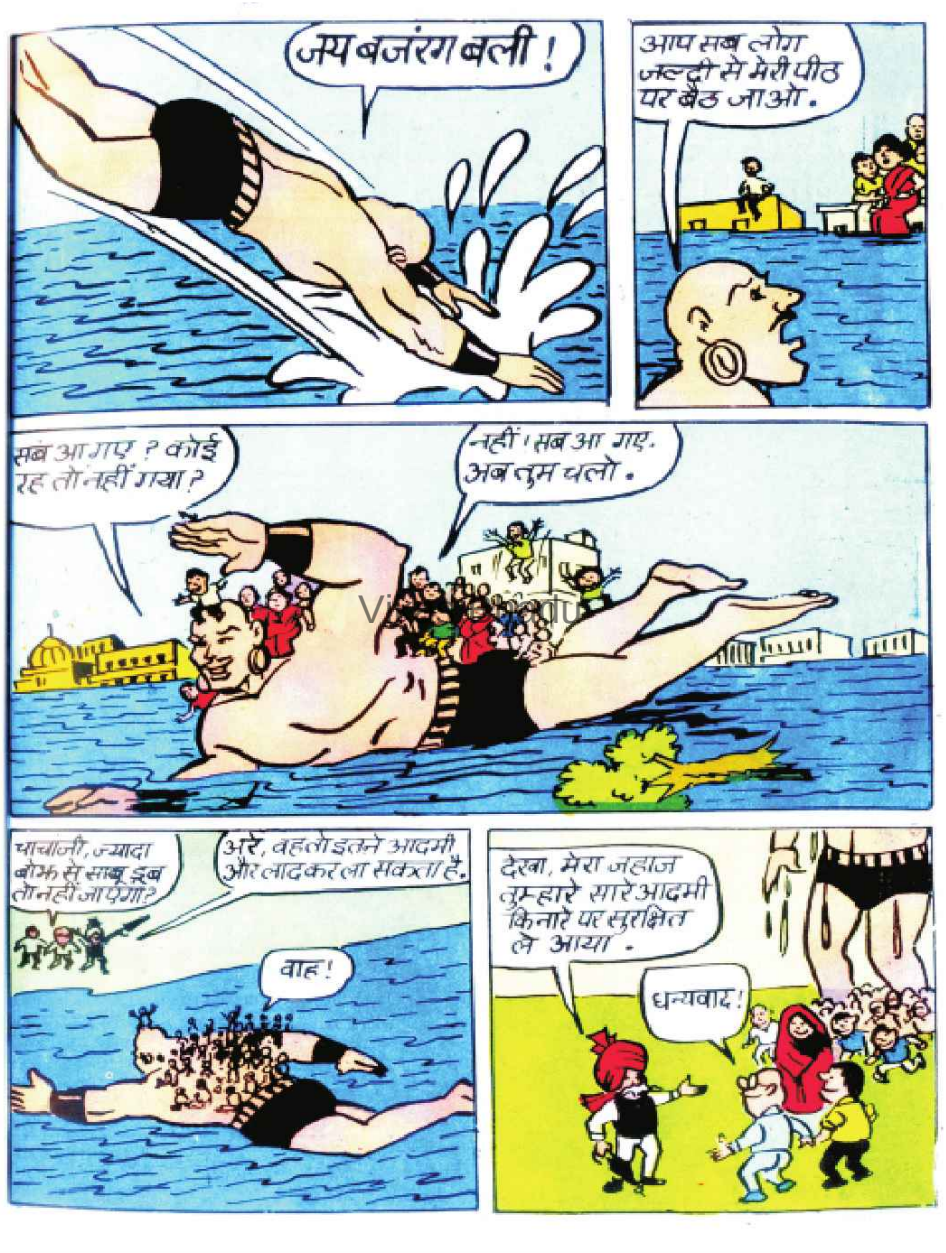
जय बजरंग बली !
आप सब लोग जल्दी से मेरी पीठ पर बैठ जाओ.
सब आ गए ? कोई रह तो नहीं गया ?
नहीं। सब आ गए. अब तुम चलो.
चाचाजी, ज्यादा बोझ से साबू डूब तो नहीं जाएगा?
अरे, वह तो इतने आदमी और लादकर ला सकता है.
वाह!
देखा, मेरा जहाज तुम्हारे सारे आदमी किनारे पर सुरक्षित ले आया.
धन्यवाद!

जादूगरनी शीबा

लोगों की नजरों से दूर, घने जंगलों में शीबा का किला है.

सबसे दूर शीबा सिर्फ अपने संसार में ही रहती है.

मेरा दिल बहलाने के लिए मेरे पास हर जाति और देश के लोग इन मर्तबानों में बंद हैं. मेरा यह संग्रहालय दुनिया में सबसे अनूठा है.

Vikas Bhadu

लेकिन शीबा! तुम्हारा इंसानों का यह संग्रहालय अधूरा है.

क्यों, यांकी? मेरे पास गोरे, काले, पीले, अंग्रेज, अरब, चीनी, अफ्रीकी सब तरह के आदमी हैं. अब किसकी कमी है.

साबू की.

शीबा ! साबू इंसान जाति का एक अजीब करिश्मा है. जब तक वह इस संग्रहालय से बाहर है, तब तक यह अधूरा है.
यांकी ! अगर ऐसी बात है तो साबू यहां अवश्य आएगा.
काले तिलस्म ! मुझे साबू की शक्ल दिखाओ !
वाह ! सचमुच मेरा संग्रहालय इस हीरे से वंचित है. क्या हृष्ट-पुष्ट शरीर है ! क्या मांसल बाजू हैं !
गोरंग ! मुझे यह साबू नाम का आदमी चाहिए.
जो हुक्म, शीबा !
जब तक तुम इसे यहां लाओगे, एक मर्तबान तैयार मिलेगा.

वाह! लस्सी पी कर लुत्फ आ गया! चाची लस्सी बनाने में खूब माहिर हैं.
लेकिन साबू! अपने को तो अभी तक काफी नहीं मिली.
घर में काफी का पाउडर नहीं है. चीनी खत्म है, भैंस भी खत्म है. काफी कैसे बनेगी?
भागवान! मैंने काफी मांगी थी, मुसीबत नहीं
जब तक यह चीजें नहीं आएंगी, घर में काफी नहीं बन सकती.
जब तक इतना सामान आएगा, आपका काफी का मजा ठंडा पड़ जाएगा. क्यों नहीं चल कर किसी होटल में काफी पी आते?

Vikas Bhadu

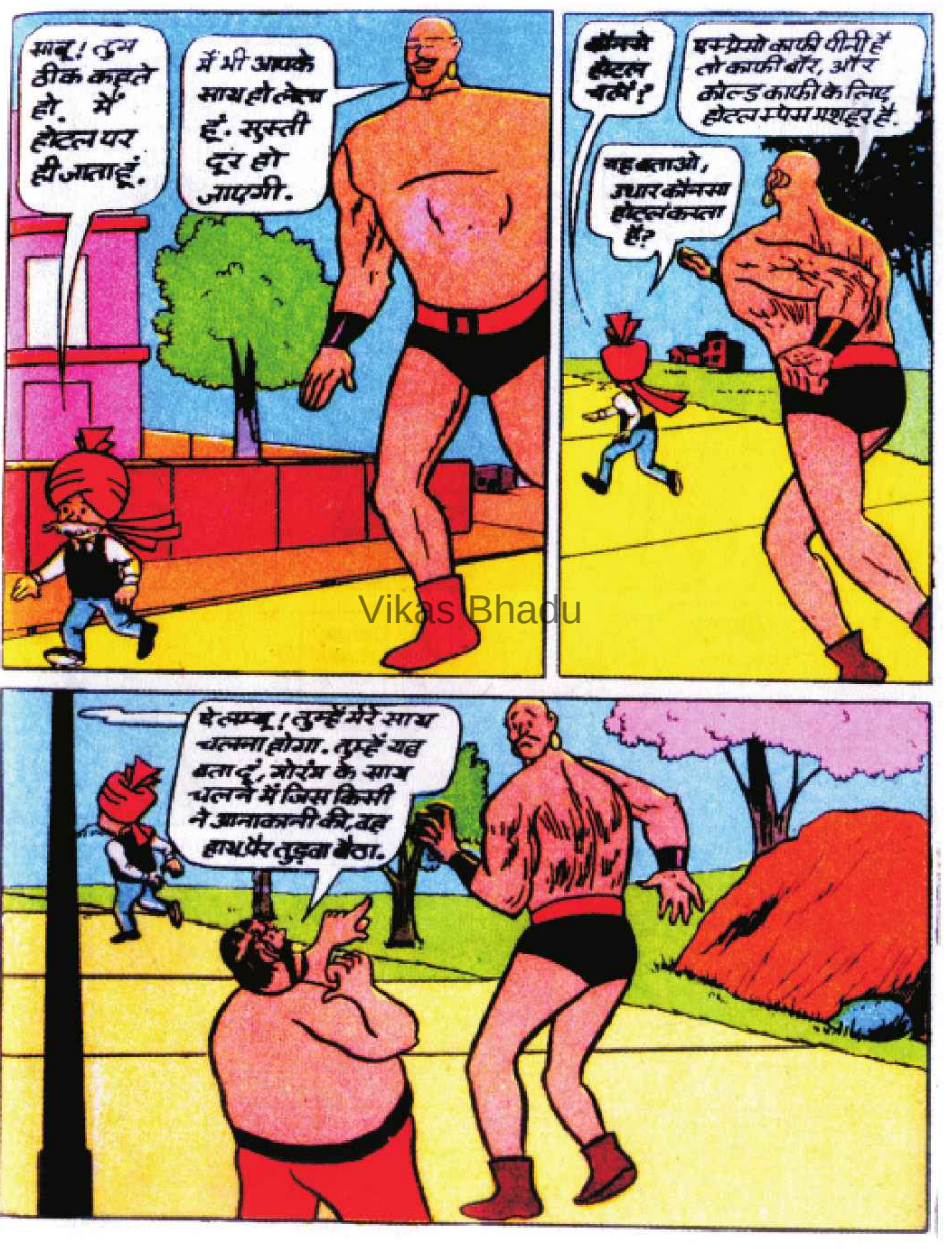
बाबू! तुम ठीक कहते हो. मैं होटल पर ही जाता हूं.
मैं भी आपके साथ ही चलता हूं. सुस्ती दूर हो जाएगी.
कौनसे होटल चलें?
एक्सप्रेसो कॉफी पीनी है तो कॉफी बीन, और कोल्ड कॉफी के लिए होटल स्पेस मशहूर है.
यह बताओ, उधार कौनसा होटल करता है?
वेल्कम बाबू! तुम्हें मेरे साथ चलना होगा. तुम्हें यह बता दूं, मोरांग के साथ चलने में जिस किसी ने आनाकानी की, वह हाथ पैर तुड़वा बैठा.
Vikas Bhadu

धड़ाक!
यह कौन बदतमीज है?
गोरंग?... अंदर आने का क्या यह रास्ता है?
शीबा! गोरंग पर नाराज न हो. इसका कोई कसूर नहीं. इस रास्ते से इस बेचारे को साबू ने भेजा है.
उस मामूली आदमी की यह हिम्मत कि मेरे सबसे ज्यादा विश्वसनीय गोरंग को यूं जलील करे?
घमंड का सर हमेशा नीचा होता है, शीबा!
बेवकूफ पंखचू! तुम बहुत बड़बड़ करने लगे हो.

Vikas Bhadu

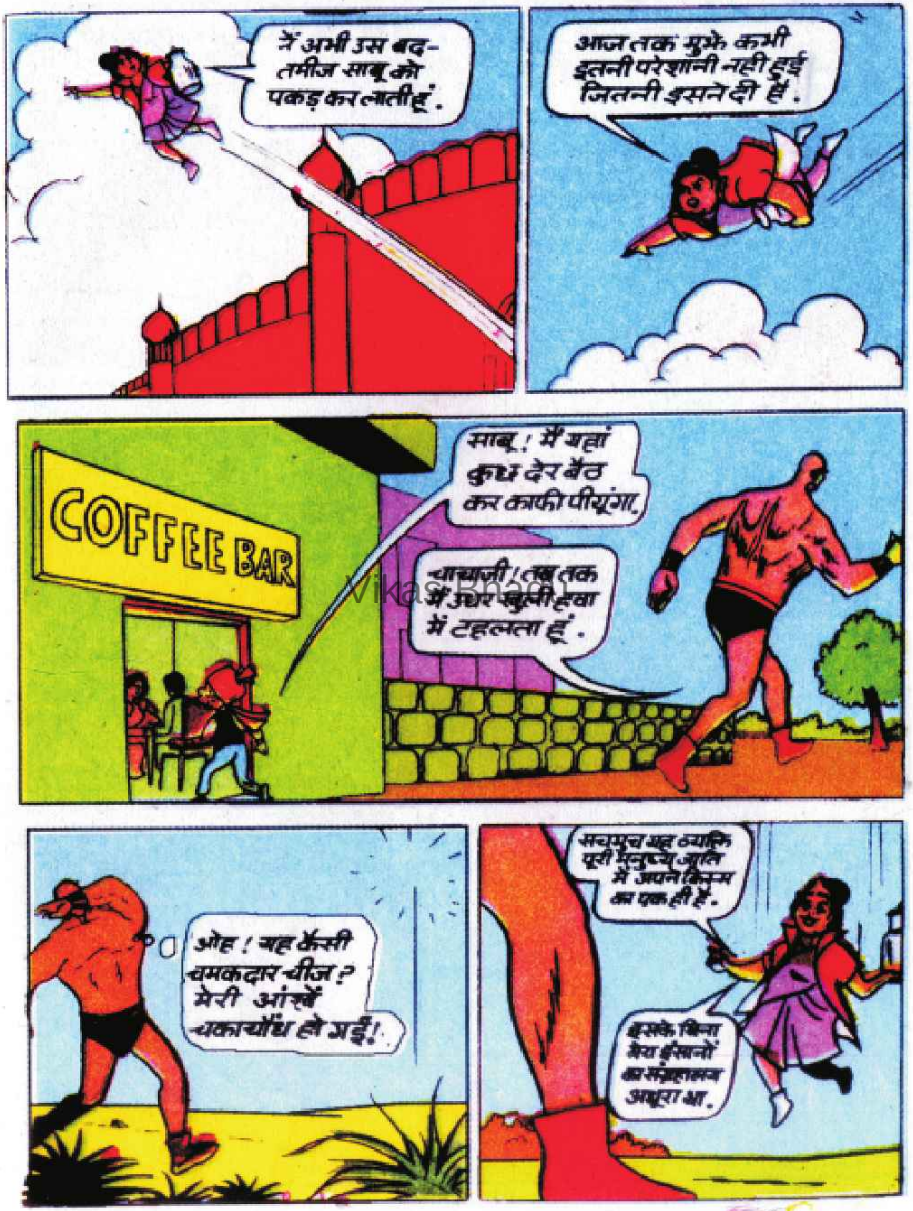
मैं अभी उस बद-तमीज साबू को पकड़ कर लाती हूं.
आज तक मुझे कभी इतनी परेशानी नहीं हुई जितनी इसने दी है.
COFFEE BAR
साबू! मैं यहां कुछ देर बैठ कर कॉफी पीयूंगा.
चाचाजी! तब तक मैं उधर खुली हवा में टहलता हूं.
ओह! यह कैसी चमकदार चीज? मेरी आंखें चकाचौंध हो गईं!
सचमुच यह व्यक्ति पूरी मनुष्य जाति में अपने किस्म का एक ही है.
इसके बिना मेरा इंसानों का संग्रहालय अधूरा था.

साबू ! तुमने मेरे सबसे प्रिय दास गोरंग को कष्ट दे कर मुझे नाराज किया, फिर भी तुम्हें माफ कर दूंगी यदि चुपचाप मेरे साथ चलने को तैयार हो जाओ.

चचा चौधरी ने मुझे औरतों पर हाथ उठाने को मना कर रखा है इसलिए जाओ, अपना रास्ता लो.

ताड़ के वृक्ष ! तुम सीधी भाषा नहीं समझते !

ओह! यह क्या?

इस मर्तबान में आ जाओ !

औरत ! तुमने मुझे बोतल में बंद कर दिया!

हा! हा!

VikashBhadu

तुम्हें शीबा के साथ चलना होगा!

अगर मैं इंकार कर दूं तो?

मैंने उस हर चीज को पाया है, जिसे चाहा है. मैं तुम्हें मर्तबान में डाल कर ले जाऊंगी.

धड़ाक!

देखो मेरी ताकत!

सचमुच तुम बहुत शक्तिशाली हो, शीबा! लेकिन तुम्हारे मर्तबान में पहले से ही साबू हैं. एक में दो कैसे आएंगे?

ओह! मेरे पास दूसरा खाली मर्तबान नहीं है.

शीबा! तुम मेरे साथ मेरे घर चलो. मैं तुम्हें खाली मर्तबान दूंगा जिसमें तुम मुझे बंद करके अपने साथ ले जाओ.

सचमुच तुम कितने बुद्धिमान हो, चाचा चौधरी!

तुम बाहर ठहरो. मैं अंदर से मर्तबान लाता हूं.

चाचा चौधरी ने अपना जाल बिछाना शुरू कर दिया है.

© PRAN'S FEATURES

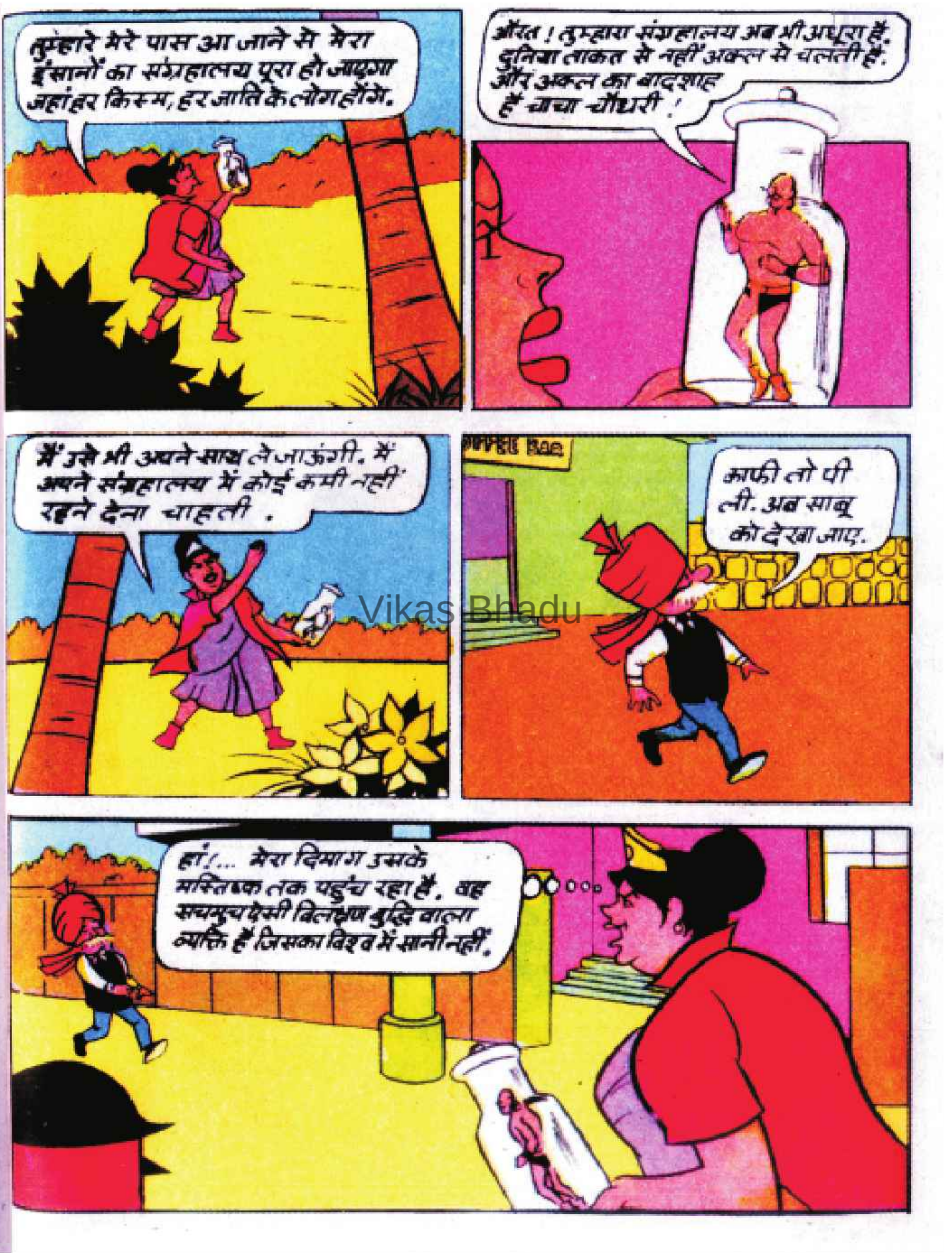

तुम्हारे मेरे पास आ जाने से मेरा इंसानों का संग्रहालय पूरा हो जाएगा जहां हर किस्म, हर जाति के लोग होंगे.
औरत! तुम्हारा संग्रहालय अब भी अधूरा है. दुनिया ताकत से नहीं अक्ल से चलती है. और अक्ल का बादशाह है चाचा चौधरी!
मैं उसे भी अपने साथ ले जाऊंगी. मैं अपने संग्रहालय में कोई कमी नहीं रहने देना चाहती.
काफी तो पी ली. अब साबू को देखा जाए.
हां!... मेरा दिमाग उसके मस्तिष्क तक पहुंच रहा है. वह सचमुच ऐसी विलक्षण बुद्धि वाला व्यक्ति है जिसका विश्व में सानी नहीं.
Vikas Bhadu

अरे, इसमें तो कुछ है?
अचार.
अचार? मुझे बहुत पसंद है!
पता है, खट्टी और चटपटी चीजें औरतें पसंद करती हैं. खाओ, फिर इसी मर्तबान में मुझे बंद करके तुम ले जाना.
वाह! बहुत स्वादिष्ट. मुझे और चाहिए.
बस... डाक्टर कहते हैं, ज्यादा खट्टी चीजें खाने से गला खराब हो जाता है.
मुझे और अचार न दिया तो तुम्हें नरक में पहुंचा दूंगी!
शाबा! अब तुम एक मक्खी भी नहीं मार सकती.
सत्यानाश! मेरा जादू क्यों नहीं काम कर रहा?
तुम्हारी सारी ताकत अंगूठी में थी जो तुमने उंगली में पहन रखी थी. अचार निकालते समय तेल की चिकनाई से अंगूठी उंगली से फिसल कर मर्तबान में ही गिर पड़ी. अब तुम सिर्फ एक आम औरत हो. ✱
✱ चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है.

Vikas Bhadu

हाईजैकर

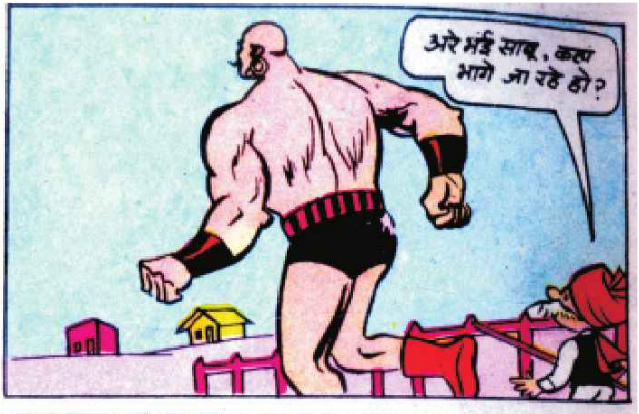
अरे भई साधू, कहां भागे जा रहे हो?

एक रेल गाड़ी पटरी से नीचे उतर गयी है. क्रेन आने में बहुत देर लगेगी. इसलिये स्टेशन मास्टर ने मुझे बुलवा भेजा है. गाड़ी पटरी पर रखकर अभी आता हूं.

अच्छा, मैं भी देखूं मेरे लिये क्या काम है?

Vikas Bhasu

हू-हू!
अरे पतंगी राम! क्यों रो रहे हो?

मुझसे यह पतंग नहीं उड़ रही.

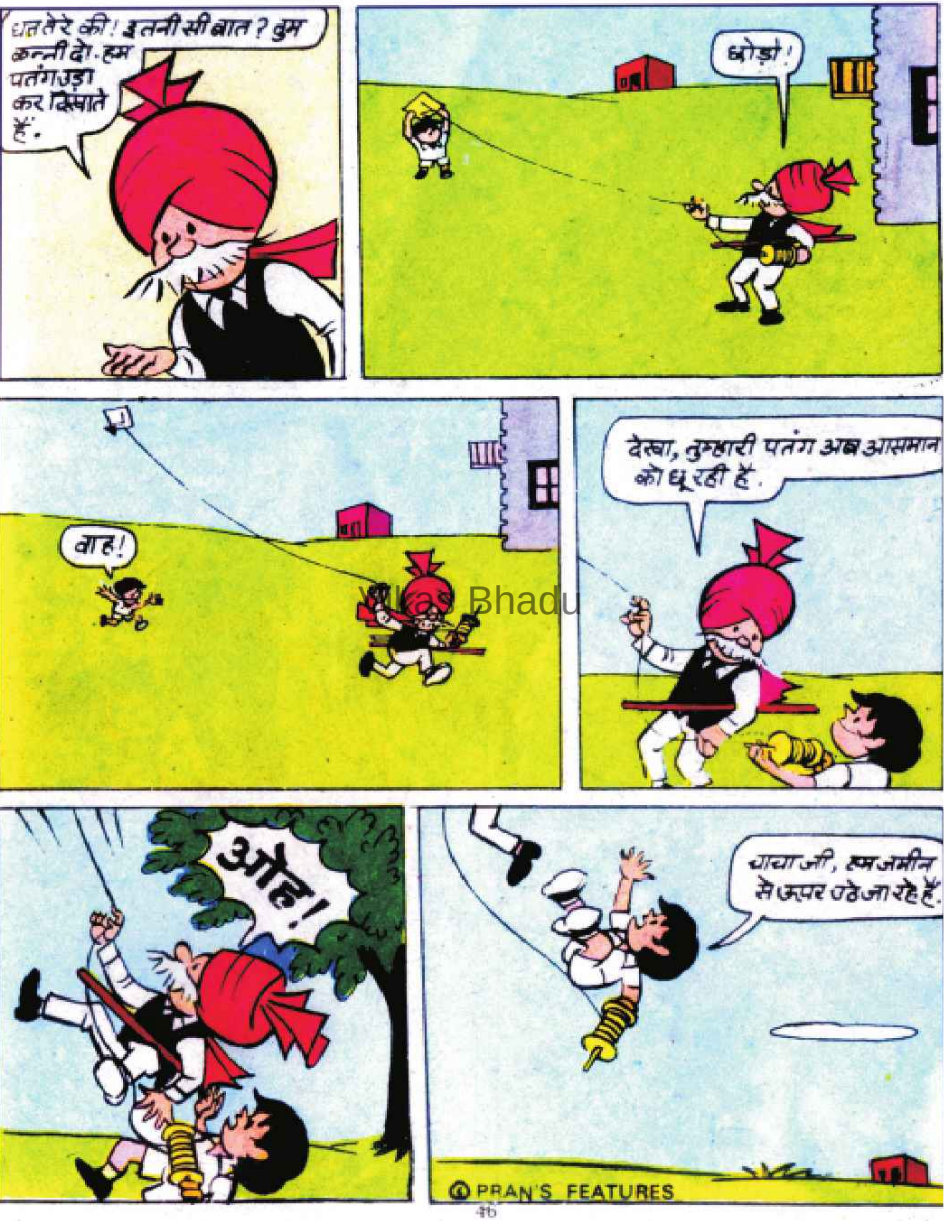
धत तेरे की! इतनी सी बात? हम अभी दो-हम पतंग उड़ा कर दिखाते हैं.
धोड़ो!
वाह!
देखा, तुम्हारी पतंग अब आसमान को छू रही है.
ओह!
चाचा जी, हम जमीन से ऊपर उठे जा रहे हैं.
© PRAN'S FEATURES
Vikas Bhadu

हमारी पतंग हवाई जहाज में अटक गयी है.
अगर हम इतनी ऊंचाई से कूदते हैं तो हमारी हड्डी पसली एक नहीं बचेगी. इसलिये हम डोर के सहारे उस हवाई जहाज तक पहुंच जाते हैं.
ठीक है.
अरे पायलट साहब! बड़ी मुश्किल से आप के जहाज तक पहुंचे हैं. जरा बटन दबा कर दरवाजा तो खोलिये.
जहाज के अंदर.
कोई हिले नहीं. मैं जहाज को हाईजैक कर रहा हूं.
तभी पीछे से.
ताड़
हाय
जहाज अगले हवाई अड्डे पर उतरता है.
चलो, तुम्हारी पतंग की वजह से एक हाईजैकर पकड़ा गया.

Vikas Bhadu

दानव से टक्कर
रामू और श्यामू दो पाकेटमार समुद्र के किनारे घूम रहे थे.
रामू देख! वह बोतल तैर रही है.
लपककर उठा लो. शायद इसमें कुछ माल मिल जाए.
अरे इसमें तो एक आदमी है. बाहर निकाल कर पूछता हूं कि वह क्या कहना चाहता है?
कार्क खोलते ही ...
हा-हा-हा! तुमने मुझे कैद से निकाला है. इस लिए तुम मेरे मालिक हो. तुम मुझे कुछ भी काम कह सकते हो. मैं उसे करूंगा.
रामू, हम इसे क्या काम कहें?
बेवकूफ, चाचा चौधरी हम पाकेटमारों और उठाईगीरों का दुश्मन है और उसकी असली ताकत है साबू! क्यों न हम इसे कहें कि ये साबू को खत्म कर दे.
कौन... साबू? हा-हा... उससे तो मुझे भी एक पुराना हिसाब चुकता करना है.

Vikas Bhadu

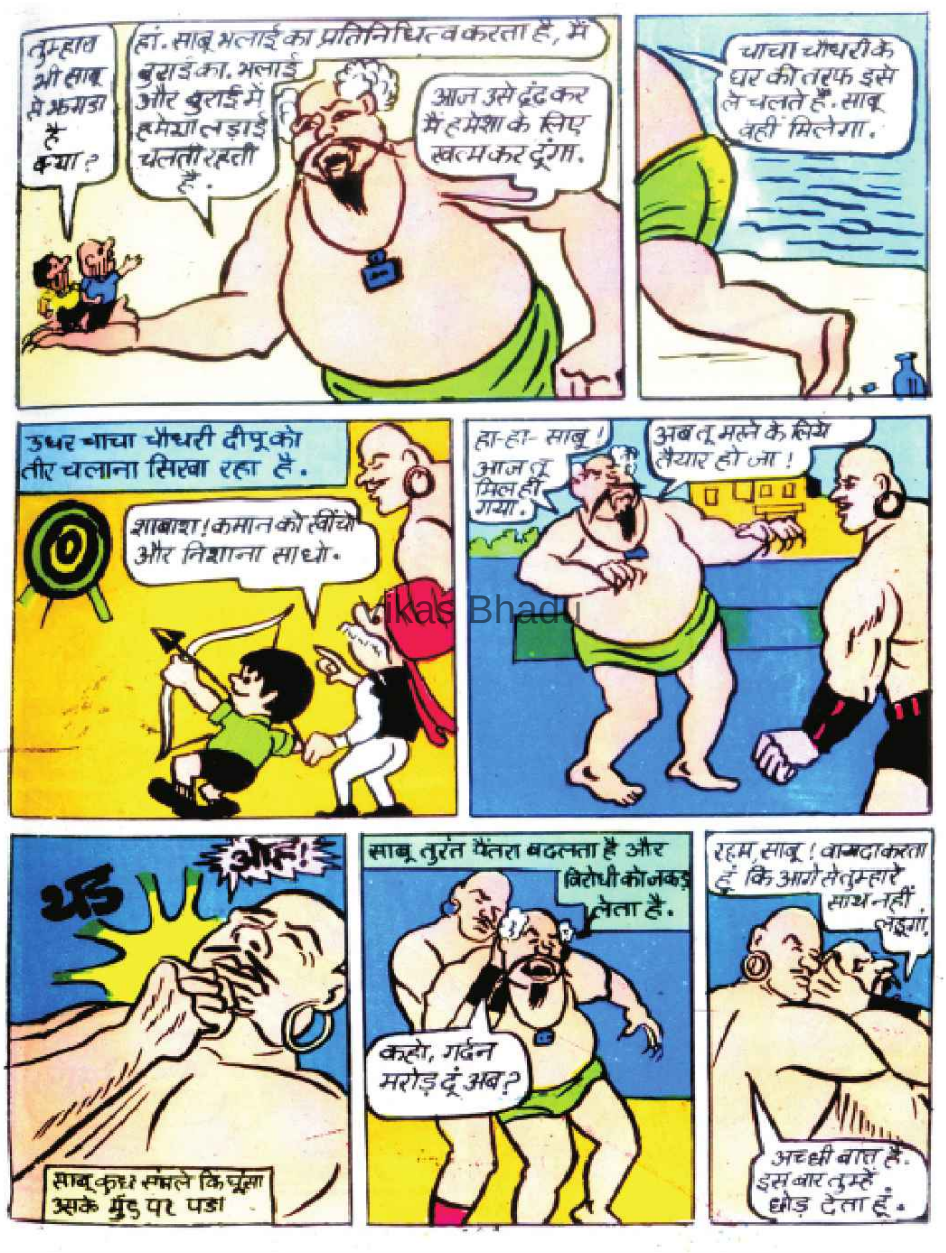

तुम्हारा भी साबू से झगड़ा है क्या?
हां. साबू भलाई का प्रतिनिधित्व करता है, मैं बुराई का. भलाई और बुराई में हमेशा लड़ाई चलती रहती है.
आज उसे ढूंढ कर मैं हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा.
चाचा चौधरी के घर की तरफ इसे ले चलते हैं. साबू वहीं मिलेगा.
उधर चाचा चौधरी दीपू को तीर चलाना सिखा रहा है.
शाबाश! कमान को खींचो और निशाना साधो.
हा-हा- साबू! आज तू मिल ही गया.
अब तू मरने के लिये तैयार हो जा!
धड
आह!
साबू कुछ संभले कि घूंसा उसके मुंह पर पड़ा
साबू तुरंत पैंतरा बदलता है और विरोधी को जकड़ लेता है.
कहो, गर्दन मरोड़ दूं अब?
रहम, साबू! वायदा करता हूं कि आगे से तुम्हारे साथ नहीं लड़ूंगा.
अच्छी बात है. इस बार तुम्हें छोड़ देता हूं.

Vikas Bhadu

बेवकूफ, मुझे छोड़कर तूने मुसीबत मोल ली है. अब मैं अपनी दैवी शक्ति से तुझे खत्म कर दूंगा.

ओह!

दैवी शक्ति के प्रभाव से साबू के सारे शरीर में भीषण पीड़ा होने लगती है.

हूं! दैवी शक्ति का उद्गम उसके गले में लटका ताबीज है. दीपू, जरा तीर कमान देना.

चाचा चौधरी निशाना लगाता है.

ओह! तीर ने मेरा तावीज काट दिया.

अब हम दोनों बराबरी के धरातल पर खड़े हैं.

मैं तुम्हें अब भी कुचल सकता हूं. मरने के लिए तैयार हो जाओ साबू!

आगे बढ़ते ही साबू ने उसे एक जोरदार पटखनी खिलाई.

रामू, हमारा जिन्न मर गया. भागो यहां से!

भलाई की बुराई पर हमेशा ही जीत होती है.

© PRAN'S FEATURES

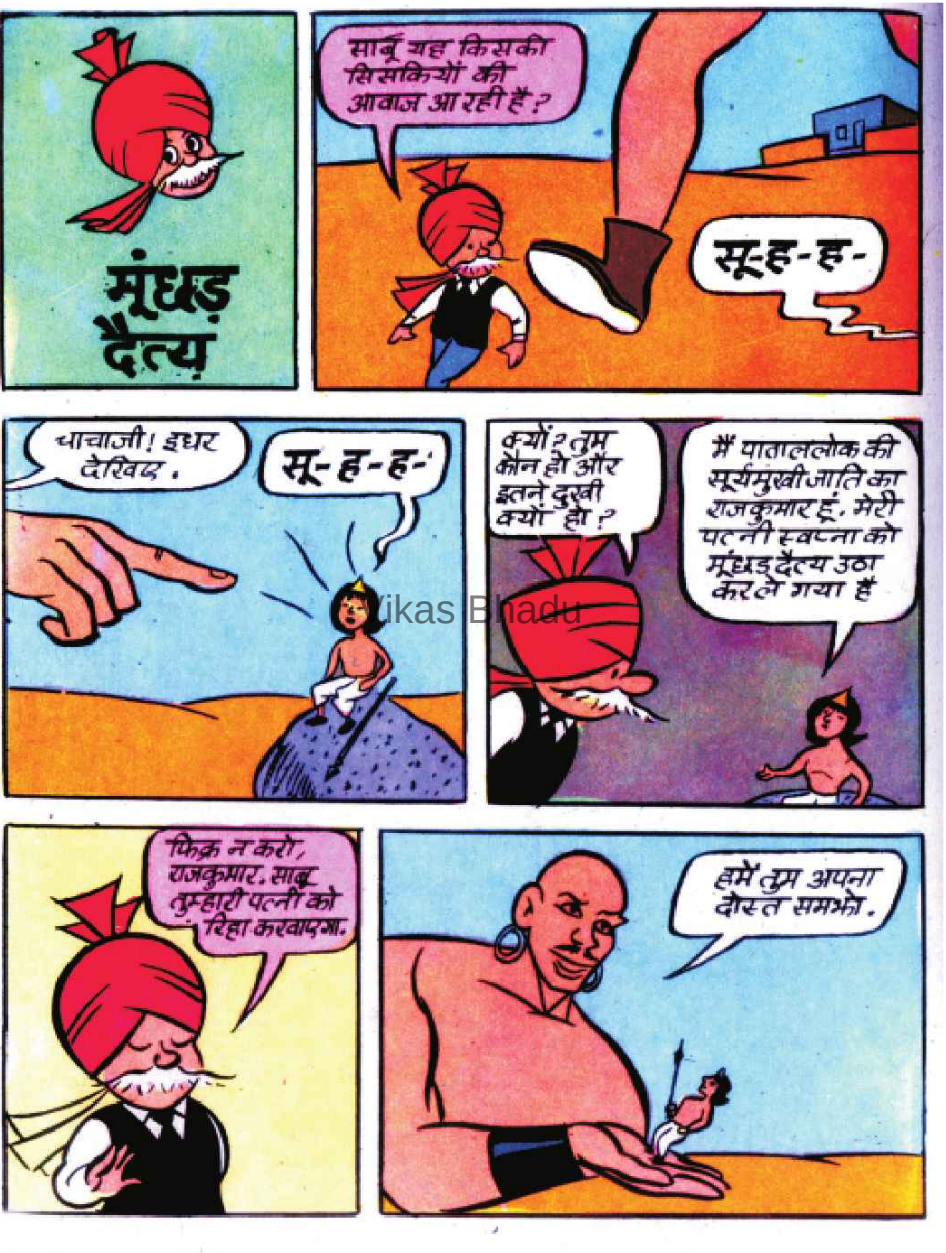

मूंछड़ दैत्य
साबू यह किसकी सिसकियों की आवाज आ रही है?
सू-ह-ह-
चाचाजी! इधर देखिए.
सू-ह-ह-
क्यों? तुम कौन हो और इतने दुखी क्यों हो?
मैं पाताललोक की सूर्यमुखी जाति का राजकुमार हूं. मेरी पत्नी स्वप्ना को मूंछड़ दैत्य उठा कर ले गया है
फिक्र न करो, राजकुमार. साबू तुम्हारी पत्नी को रिहा करवाएगा.
हमें तुम अपना दोस्त समझो.

Vikas Bhadu

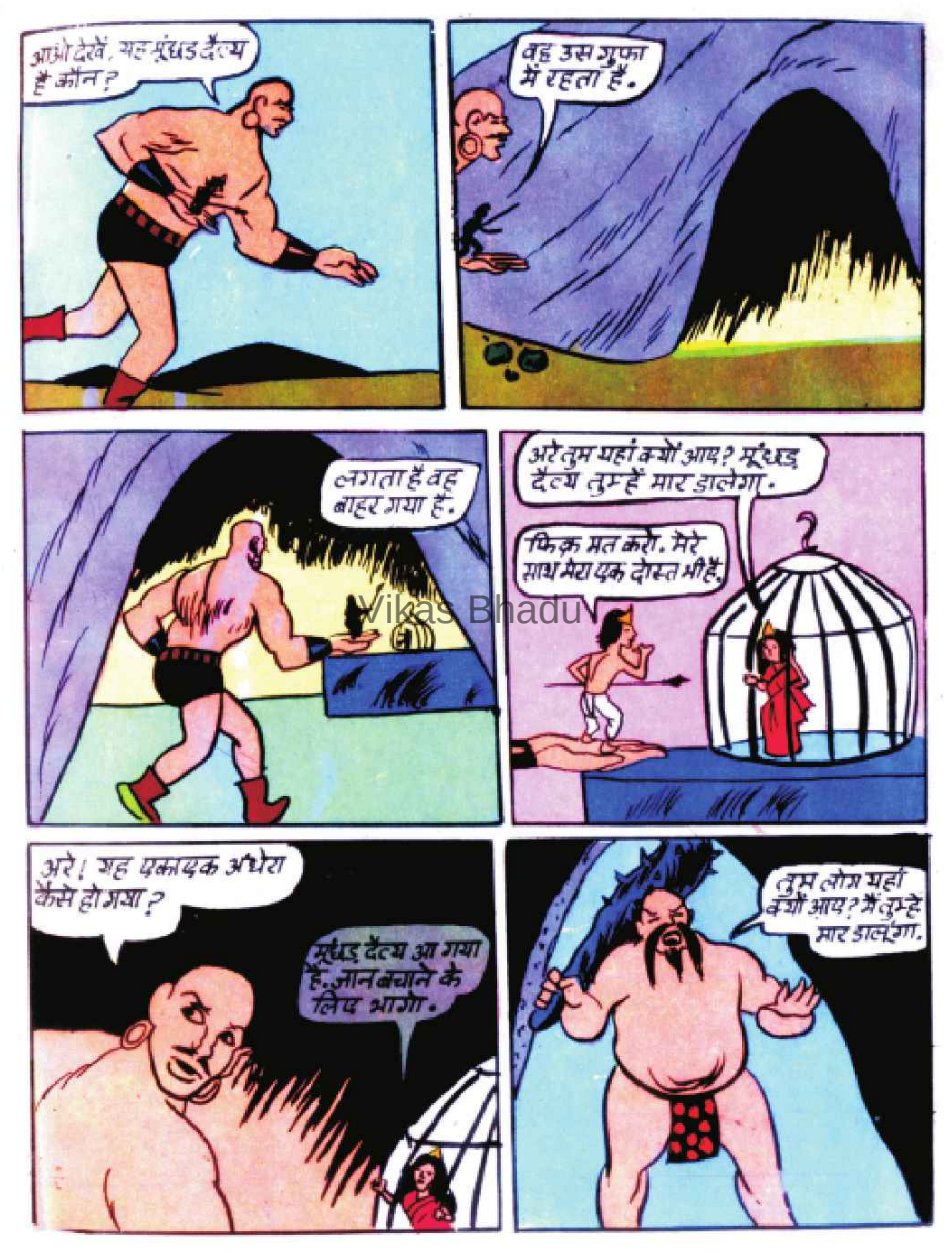
आओ देखें, यह मूंछड दैत्य है कौन?
वह उस गुफा में रहता है.
लगता है वह बाहर गया है.
अरे तुम यहां क्यों आए? मूंछड दैत्य तुम्हें मार डालेगा.
फिक्र मत करो. मेरे साथ मेरा एक दोस्त भी है.
अरे! यह एकाएक अंधेरा कैसे हो गया?
मूंछड दैत्य आ गया है. जान बचाने के लिए भागो.
तुम लोग यहां क्यों आए? मैं तुम्हें मार डालूंगा.
Vikas Bhadu

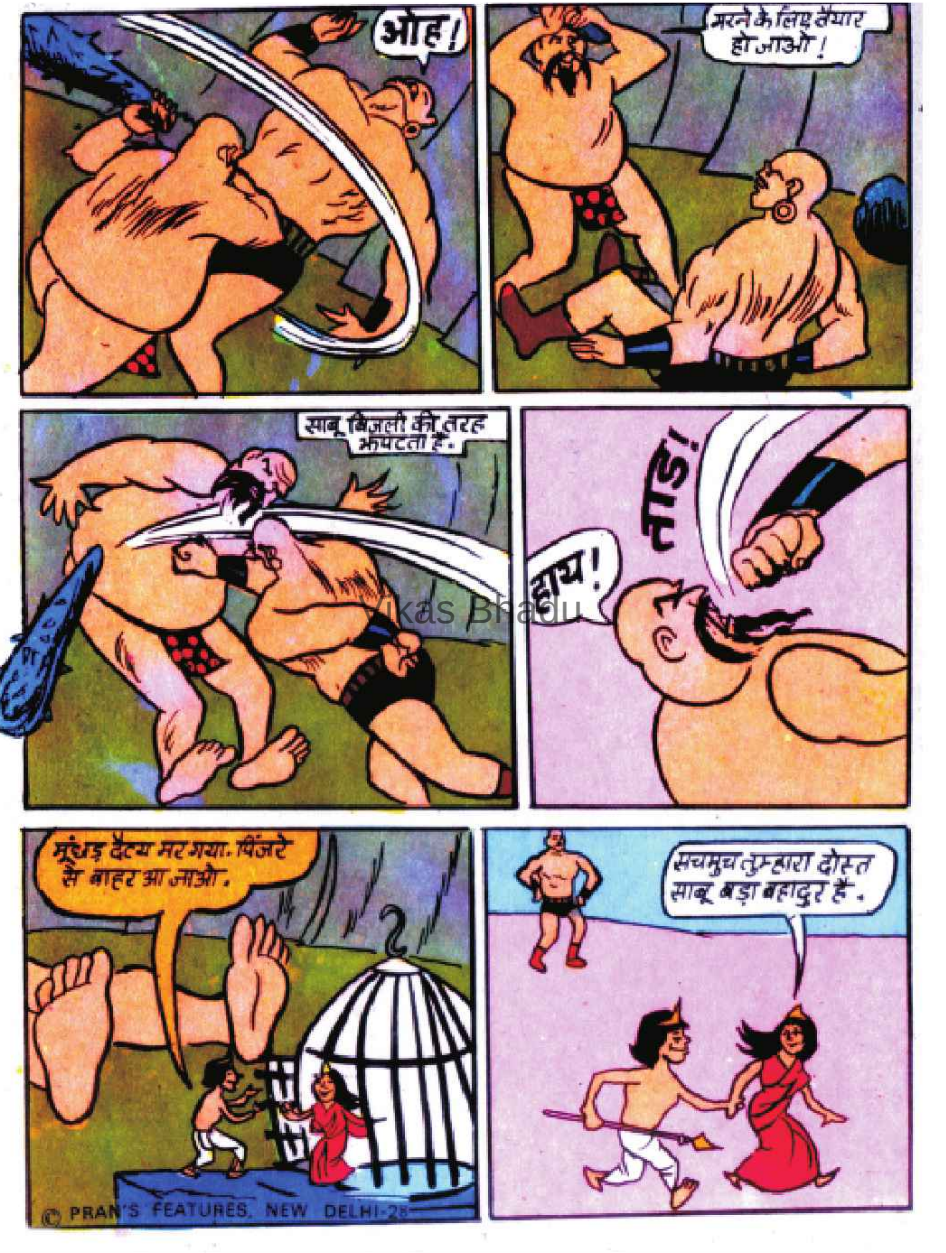

© PRAN'S FEATURES, NEW DELHI-28
Vikas Bhadu